बादल और जमीन

तरस गयी हूँ मैं, क्यों नहीं आते तुम ?
सुख रहा है दामन मेरा, क्यूँ तरसाते तुम ?
पिछली बार भी वक़्त लिया और कर गए एक वादा |
भूल न मेरे शब्द अगली बार आऊंगा जल्दी मन मैं है इरादा |
क्या दिखाऊँ चेहरा अपना अपने इन बच्चो को |
मेरी गोद में पलते है ये लेकिन निर्भरता हो तुम |
तरस गयी हूँ मैं, क्यों नहीं आते तुम ?

तुम कहो तो, मैं जल्दी आ जाऊंगा |
अगर कहोगी तो तेरे पर एक बार में बरस जाऊंगा |
लेकिन तुम मेरी, स्थिति नहीं समझ पा रही |
दुनिया बाकी मुझे इतना बता रही |
सूरज चाचा, हो रहे हैं गरम |
टूट रहा हूँ मैं क्यूंकि, मैं हूँ नरम |
सुनने मैं तो आया की, तेरे लाडलो की है करतूत |
जो थे सपूत, वही निकले कपूत |
जिन के लिए तू मांग रही है, इतनी भीख |
तेरी सुन्दरता को मिटाने वाले, नहीं रहे कुछ सीख |
लालच इनका तेरा अस्तित्व मिटा रहा है |
तू बैठी बस इनकी भूख मिटा रही है |
छोर दे इनका साथ नहीं तो, बना देंगे तुझे बंजर |
तेरी ही सीने में भोक रहे हैं, खंजर |
कुछ दिन बाद जब, मैं जाऊँगा बरस |
इनके मन में भर जाएगा, उल्लास और हरस |
फिर चलाते हैं, तेरे ऊपर औजार |
कहते तुझको माँ, लेकिन नहीं करते प्यार |
तेरे ही गोद से निकले तुझमे ही होंगे ख़त्म |
फिर भी इनका मन न माने रहते बिलकुल बेशरम |
क्यूँ करती है इतना ? जब न सोचे तेरे बारे में |
लड़ते भी खुद में,सिर्फ तुझे मिटाने के लिए |
तुझे देखकर मुझे है, तरस आता |
क्यूँ प्रकर्ति ने ये कार्य बनाया,जब इन्हें कुछ न भाता|

इनका लालच ऐसा, जो की करता हमें बर्बाद |
तू नीचे रो रही मुझे भी लगा प्रदुषण का श्राप |

क्या कर सकते है हम ? इस स्थिति में |
जब तक कर्म है अपना, निभाएंगे हर पहर में |
तुम आयो या ना आयो इनके पास है उपाय |
कुछ वर्ष बाद शायद तुम्हारी निर्भरता ख़त्म हो जाए
तुम अपना कर्म निभाते रहो, मैं अपना निभाउंगी |
जब अंत आएगा इनका उसके बाद भी रह जाउंगी |
नयी पीढ़ी के लिए फिर जरुरत बन जाउंगी |
तब तुम अपनी निर्भरता इनको अच्छे से बताना |
हो पिता समान इसका ज्ञान जरुर दिलाना |
आएगा वो समय जब पानी होगा सिर के पार |
उसके बाद खुलेंगे जीवन के नए द्वार |
नयी उमंग एवं तरंग से होगा तेरा सत्कार |
लेकिन तब तक तुम बस करो इंतज़ार |

- कँवर, अभिषेक, छात्र